International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

कवि अज्ञेय और ज्ञानपीठ पुरूस्कार

डॉ मंजु तॅवर
एसोसिऐट प्रोफेसर, सत्यवति कॉलेज
अशोक विहार,
नई दिल्ली–110028

स्वयं अंज्ञय ने ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलने के बाद तथाकथित लोकप्रियता तथा पुरस्कृत होने के बाद लोकप्रिय होने पर यह टिप्पणी की थी–'' और यह तो है ही कि इस हुआ हैं, जो यों शायद कविता में भी विशेष रूचि न रखते हों। सच कहूॅ तो स्वयं मुझे पुरस्कार की घोषणा से आच्श्रर्य हुआ और मैंने एक बार पुस्तक अलट–पुलट कर देखी इस कुतूहल से, कि इसमें कौन– सी बात हो सकती हैं, जो पुरस्कार के निर्णायकों को प्रभावित करें।'' (कठिन प्रस्वर में अग्रि सुराख, सम्पादकः विश्वरंजन पृ–263)दरहसल अज्ञेय के इस व्यक्तव्य से सग्रह की लोकप्रियता को संदेह के घेरे में नहीं रखा जा सकता। लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि कुछ लोगों की दृष्टि में कवि के रूप में अज्ञेय को लोकप्रियता पुरस्कार के रास्ते ही मिली। यों अज्ञेय का स्वयं का मानना है कि '' जो मूल्य– दृष्टि भौतिक जीवन की बाहरी सुख– सुविधाओं और सुरक्षा को गौण स्थान देती हुई लगातार घवरायं कि जीवन की प्रवृतियों और महात्वांक्षाओं के प्रति ऐसा परीक्षण – भाव सफलता की खोज को ही जोखिम में डाल सकता है, वहा लोकप्रिय नहीं हो सकती, भले ही थोड़े से लोग उसे महत्तव देते रहें, बल्कि उससे प्रेरणा भी पाते रहें।''

यहॉ आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का उल्लेख प्रासंगिक होगा। यह कहना गलत नहीं होगा कि आचार्य द्विवेदी रचनाकार के सृजन–कर्म के फलक को 'बेहददी मैदान' की तरह देखते है, जहॉ उसकी प्रतिभा को खुलकर खेलने का मौका मिलता है। डॉ नामवर सिंह के अनुसार आचार्य द्विवेदी के चारों उपन्यासों में उनकी प्रतिभा को इसी बेहदी मैदान में खुल खेलने का मौका मिला है, जिसे उन्होंने गप्प की संज्ञा दी है । आचार्य द्विवेदी ने हिन्दी उपन्यास की परम्परा को विशेष रूप से ऐतिहासिक उपन्यास की परम्परा

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

को न केवल कथावस्तु की दृष्टि से, बल्कि प्रयोगों और भाषा शैली और शिल्प की दृष्टि से भी एक नया मोड दिया है। वह प्रयोग गत्यात्मक प्रक्रिया है। इसी प्रक्रिया में अपनी विलक्षण प्रतिभा से उसमें उन्होने बहुत कुछ ऐसा जोड़ा है जो पहले कहीं नही था। अज्ञेय ने यही काम कविता– जगत् में किया। 'तार सप्तक'में अज्ञेय ने लिखा–'' जो व्यक्ति का अनुभूत है, उसे समष्टि तक कस उसकी सम्पूर्णता में पहुॅचाया जाए– यही पहली समस्या है। जो प्रयोगशीलता को ललकारती है। इसके बाद इधर समस्याऍ है ि कवह अनुभूत ही कितना बड़ाया छोटा घटिया या बढ़िया, सामाजिक या असामाजिक, उर्ध्व या अधः या अन्तः या बहिर्मुखी है, इत्यादि।'' अज्ञेय के लिए साहित्यिक कर्म ''रचना– कर्म के साथ–साथ सांस्कृतिक कर्म भी है,और संस्कृति न निरी स्थिती है, न निरी स्थितिशीलता है। वह एक गत्यात्मक प्रक्रिया भी है।'' अज्ञेय की कविता में इसी गत्यात्मक प्रक्रिया और प्रयोगशीलता का सीधा सम्बन्ध है, जिसे गहराई और बारीकियों में जाकर पकड़ना आलोचना का काम होना चाहिए। पूछा जा सकता है कि हिन्दी आलोचना यह काम किस हद तक कर सकी है? उत्तर आश्रस्तिकर नही होगा। अज्ञेय के विशाल रचना–संसार में 'कितनी नावों में कितनी बार' कविता– संग्रह का एक विशिष्ट स्थान है। न केवल 'ज्ञानपीठ'पुरस्कार की वजह से बल्कि उक्त 'गत्यात्मक प्रक्रिया'के चलते भी । इस काव्य–संग्रह की अधिकांश कविताएँ अज्ञेय ने अपनी विश्व–यात्राओं के दौरान कीं, जिनका जरूरी उल्लेख कविताओं के अन्त में किया गया है। इन यात्राओं के दौरान कवि–मन को उद्वेलित या विचलित करने वाले अनुभव और प्रसंग कविताओं में बेबाकी से उकेरे गए है। द्वितीय संस्करण की भूमीका में अज्ञेय ने स्वंय लिखा है–'' कितने नावों में कितनी बार'के लोकप्रिय होने की सम्भावना बहुत कम है, यधपी उसमें कुछ कविताएँ ऐसी अवश्य है, जिन्हें मैं अपनी जीवन–दृष्टि के मूल स्वर के अत्यन्त निकट पाता हूँ। इस बात को कदाचित् इसी तरह कहना ज्यादा सही होगा–कि उस जीवन–दृष्टि के ही लोकप्रिय होने की सम्भावना बहुत कम है। यह इसलिए नहीं कि उसमें सच्चाई या गहराई की कमी है, बल्कि इसलिए कि हमारे समाज की उघतन प्रवृत्तियाँ उन मूल्यों को महत्त्व नहीं देती, जो इस दृष्टि का आधार हैं। अज्ञेय की इस बात का खुलासा उनके कविकर्म और काव्य–विचार के साथ– साथ उनकी समूची सभ्यता होगा, जिसकी यहाँ गुजाइश नही हैं। अज्ञेय की डायरियों('भवन्ती','अन्तरा'और 'शेषा') का अध्ययन– मनन इस सन्दर्भ में विशेष उपयोगी होगा।

अज्ञेय को अकेलेपन और एकान्त का कवि माना जाता है। ध्यान देने की बात यह है कि किस तरह अज्ञेय इस अकेले जागने वाले मनुष्य के भीतर से स्वयं को भी देखते है–

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

और यों

इन नामहीनों की जिन्दगी जीता हुआ मैं

वही लौट आता हूँ जहाँ में होता हूँ

जब मैं जागता हूँ

और यों

मैं जो हम सब हैं

इस संग्रह की अधिकांश कविताओं में एकान्त और अकेलेपन का भाव जहाँ–तहाँ बिखरा पड़ा है–

मैं जो धुप अँधेरे में एक प्रकाश से घिर जाता हूँ–

मैं, जो नींव की ईट हूँ:

सुरसुराते चुप में एक अलौकिक संगीत से

गूँज उठता हूँ:

मैं, मामूली, अकेला,दुर्लभ, अनश्रवर–

मैं, जो हम सब हूँ।

'घुप अँधेरे'से 'प्रकाश'में घिरना, 'नींव की ईट'की तरह आधार बनना, 'सधे हुए तार'और 'अलौकिक संगीत'का सुनना– कवि– मर्म के संघर्ष और सकारात्मक सोच का अनूठा नमूना है। कवि का यही मर्म अन्तमंन की एकान्तता और शहरीजीवन की त्रासदी में भी उसे कर्म के लिए प्रेरित करता रहता है–

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

शहर के दूर के तनाव– दबाव कोई सह भी ले

पर यह अपने ही रचे एकान्त का दबाव

सहा कैसे जाए।

एक स्पष्ट जीवन–दर्शन उनकी कविताओं में यत्र–तत्र बिखरा पड़ा है। उनकी कविताओं में जीवन मानों छन– छनकर आता है–

और इनती ही बात है जो बार– बार कही गई

और हर बार कही जाने में ही

कही जाने से रह गई।

इन कविताओं में जीवन है और जीवन में गति हैं और इसी गति में कवि अकेलेपन के बावजूद उत्साह उमंग और लय खोजता प्रतीत होता है–

मह में क्षमता है

कि अपनी व्यथा और अपने संघार्ष में

अपने को अनुक्षण जनते चलें,

अपने संसार को अनुक्षण बदलते चलें,

अनुक्षण अपने को परिक्रान्त करते हुए

अपनी नई नीति बनाते चलें।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

भावों की यह लय अज्ञेय की कविता की आन्तरिक बुनावट का ताना–बाना जिसका कविता के अर्थ के साथ सीधा सम्बन्ध है।

अज्ञेय का प्रारम्भिक सृजन–संसार न केवल भाव के स्तर पर बल्कि काव्य–भाषा के स्तर पर भी उतना सुघड़ नहीं था, जितना उत्तरकालीन सृजन–संसार।'तार सप्तक'(1943) के प्रकाशन से पूर्व अज्ञेय हिन्दी काव्य–जगत् में अपनी पहचान नही बना पाये थे। जबकि उनकी, 'भग्नदूत'1933 में यानी कि दस वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुकी थी। वस्तुतः अज्ञेय के रचनाकर्म का सम्बन्ध छायावादोत्तरी कविता के संक्रमण और संग्रहण की इस प्रक्रिया में अज्ञेय ने जो किर्तिमान स्थापित किये हैं,वे कालगति से कादापि निरपेक्ष नही हैं। समय के प्रवाह को गत्यात्मक लय में बाँधकर अज्ञेय ने साहित्य–कर्म में सफलता के जो झण्डे गाड़े हैं, उस पर शोधात्मक गहन विचार की अपार सम्भावनाएँ हैं।

सन्दर्भ

[1]. **झेडे. (2014). अज्ञेय का काव्य का काव्य सौंदर्य.** ***Global Journal of Multidisciplinary Studies*****, *4*(1).**

[2]. **Joseph, A. M. (1999). Hindi kahaniyo mein santraas ki bhavana: Ajey, Mohan Rakesh aur Nirmal Verma ke vishesh sandarbh mein (हिन्दी कहानियों में सन्त्रास की भावना-अज्ञेय, मोहन राकेश और निर्मल वर्मा के विशेष सन्दर्भ में).**